साबर मंत्र का एक गोपनीय रहस्य-: By 💖 Prakash Ji 💖

जिज्ञासु जनों के प्रश्न-:

बजरंग बाण या वडवानल स्तोत्र क्या ज्यादा प्रभावी है।

हमारे और से उत्तर:-बड़वानल स्त्रोत को अनुष्ठान के रूप में ले सकते हैं पठन-पाठन भी कर सकते हैं.... बजरंग बाण.... जल्द प्रभाव दिखाता है पर यह मोक्ष मार्ग में बाधा उपजाता है..... अब मार्ग आपके हाथ में है जो चाहें वह कर सकते हैं

जिज्ञासु जनों के पुनः प्रश्न-: Prakash Ji bajrang baan moksh marg me badha upjata hai?? Wo kaise jara spast kijiye

संसय का समाधान -: किसी को मजबूर करना गलत बात नहीं होता है पर मजबूर करने का तरीका यह महत्वपूर्ण होता है 👈 मछिंद्रनाथ ने जितने भी साबर मंत्र रचना की है कहीं पर भी हो दुहाई नहीं दिए हैं 👈 अन्य देवताओं का आज्ञा अथवा आदेश दिए हैं.... और अपने श्री गुरु को परमात्मा के साथ जोड़कर वह गुरुतत्व का महत्व को जागृत करते हुए गुरु के शक्ति पर बोल दिए हैं। जहां पर भी दुहाई है वह ना तो मत्स्येंद्र नाथ की रचना है ना ही गोरखनाथ की रचना है ना ही नवनाथों की रचना है 👈 । गोरखनाथ ने जितने भी मंत्र का रचना किये हैं वह भी कहीं पर भी दुहाई शब्द का उपयोग नहीं किये हैं.... गोरखनाथ ज्यादातर योग तत्व से संबंधित शाबर मत्रों के रचयिता हैं 👈 वह चाहे सिद्धासन शीला हो, केदार क्षेत्र हो अथवा पूर्व भाग के किसी भी क्षेत्र हो वहां पर गोरक्षनाथ केवल मात्र मंत्र का उपदेश दिए हैं। पर उनके किसी भी मंत्र में आपको दुहाई शब्द नहीं मिलेगा। जब मछिंद्रनाथ ने एक बार कामरूप देश गए थे वहां पर स्त्रियाराज्य में वह अवस्थान किया करते थे.... उस वक्त नैना जोगिन और लूना चमारी उन्हें बाम मार्ग में लगने वाली हर प्रकार की पूजन की समान यहां तक की फूल नैवेद्य तक भी लाकर दिया करते थे.... । मध्यकाल के पूर्वार्ध में कामरूप देश यानी कि असम मुगलों के द्वारा शासित था। एक मुगलो के एरिया में प्रवेश करने के बाद भी मछिंद्रनाथ के चमत्कार योग शक्ति का प्रतिभा हर किसने वहां पर देखा था इसलिए उनका नाम वहां पर इस्माइल जोगी हो गया..... यानी कि हर कोई उन्हें ईस्माइल योगी के नाम से जानने लगागया...और वहां पर भी मत्स्येंद्रनाथ लोना चमारी नैना योगिन इन सब के कर्म से बहुत प्रसन्न थे.... मछिंद्रनाथ इनको दीक्षित किए थे और साथ ही साथ यह आशीर्वाद भी दिए थे कि मैं तुम्हारे नाम में योग शक्ति का संचार कर रहा हूं..... अब तुम्हारे नाम अलख्पुरुष सेअभिन्न होगा। तुम्हारा नाम का महिमा को प्रकृति भी नहीं

टाल सकेगा। साबर समाधि सिद्धि का एक तरीकाहै... इस सिद्धि के तौर तरीके पर जो अपने प्राण त्याग किए हैं... उस शरीर में आज भले ही ना हो पर उनका नाम का शक्ति आज भी काम करता है। उनका अस्तित्व मिटा नहीं। और क्योंकि मछिंद्रनाथ ने यह आशीर्वाद दिए थे कि नाम का शक्ति को प्रकृति भी नहीं डाल सकता तो इसी कारण आगे चलकर असम में यानी कि कामरूप देश में जितने भी मंत्र का रचना हुआ वहां पर ज्यादातर उन नाम का दोहाई दिया गया..... और धीरे-धीरे यह केवल कामरूप देश में नहीं अपितु भारत के कोण अनुकोण जहां पर भी शाबर परंपरा चलता था वहां भी व्याप्त हो गया और इस प्रकार कामरूप देश से दुहाई की परंपरा शुरू हुआ था। और आज हमारे समझ जो साबर मंत्र आदि मिलते हैं वहां पर क्या लिखा होता है दुहाई लोना चमारिन की दुहाई गुरु गोरखनाथ की.... आदी आदी...... रामचरितमानस के रचनाकर्ता तुलसीदास जो मध्यकाल के ही मध्यवर्ती समय के थे..... उनके समय सबसे ज्यादा साबर मंत्र प्रचलित था... और साबर मंत्र की महिमा भी तुलसीदास को पूर्ण रूप से पता था। सिर्फ इसी कारण तो हो अपने रामचरितमानस ग्रंथ में लिखते हैं......

👉कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा।

साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा॥2

अनमिल आखर अरथ न जापू।

प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू॥3॥

यहां पर तुलसीदास जी कहते हैं......जिन शिव-पार्वती ने कलियुग को देखकर, जगत् के हित के लिए, शाबर मन्त्र समूह की रचना की, जिन मंत्रों के अक्षर बेमेल हैं, जिनका न कोई ठीक अर्थ होता है और न जप ही होता है, तथापि श्री शिवजी के प्रताप से जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष है॥3॥

पर जैसे कि मैंने कहा जहां पर दुहाई शब्द लग जाता है वह मोक्ष मार्ग में बाधक बन जाता है.... इसी कारण जब तुलसीदास जी ने रामचरितमानस का रचना की तब वहां पर हो रामचरितमानस को सिद्ध करने के लिए उसकी रचना शाबर भाषा में कीए... और वहां पर दुहाई ना देकर अपने भक्ति का प्रताप दिखाए हैं।साबर मंत्र शिव पार्वती के वरदान के कारण

ही चलता है उनके आशीर्वाद के कारण ही चलता है और इसमें गुरु का महत्वपूर्ण भूमिका है इसीलिए अपने ग्रंथ को सावरिय पद्धति से रखने से पहले तुलसीदास जी कहते हैं........

गुर पितु मातु महेस भवानी। प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी ॥

अर्थात में गुरु पिता तथा माता के रूप में भगवान महेश्वर और उनकी पत्नी मां भवानी को प्रणाम करता हूं जो दीन दुखियों का बंधु है तथा सब कुछ देने में समर्थ हैं।

भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती। ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती ॥

जे एहि कथहि सनेह समेता। कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥5॥

होइहहिं राम चरन अनुरागी। कलि मल रहित सुमंगल भागी॥6॥

अर्थात मेरी कविता ☞"श्री शिवजी की कृपा से" ऐसी सुशोभित होगी, जैसी तारागणों के सहित चन्द्रमा के साथ रात्रि शोभित होती है, जो इस कथा को प्रेम सहित एवं सावधानी के साथ समझ-बूझकर कहें-सुनेंगे, वे कलियुग के पापों से रहित और सुंदर कल्याण के भागी होकर श्री रामचन्द्रजी के चरणों के प्रेमी बन जाएँगे 15-6॥

साबर कार्य सिद्धि मंत्र शैली से देवता को जिस प्रकार कुछ मांगा जाता है उस प्रकार तो हमारे तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की सफलता के लिए भगवान शिव को मांग दी..... पर उसी कार्य सिद्धि शैली में मांगी गई इच्छा सच हो.... उसके लिए साबर मंत्र शैली का अंतिम भाग तो अभी भी बाकी है.... जिसको हमारी तुलसीदास जी ने पूरी किए हैं..... उसे भी देख लेते हैं...तुलसीदास जी अपनी रामचरितमानस में लिखते हैं.........

"सपनेहुँ साचेहूँ मोहि पर जौं हर गौरि पसाउ।

तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥15॥"

अर्थात यदि मुझ पर श्री शिवजी और पार्वतीजी की स्वप्न में भी सचमुच प्रसन्नताहो, तो मैंने इस भाषा कविता का जो प्रभाव कहा है, वह सब सच हो ॥15॥

यहां पर ध्यान देने की बात यह है कि तुलसीदास इस लेख के माध्यम से साबर का " मेरी भक्ति"इस भक्ति तत्व को दर्शाए हैं.... और ऊपर एक पंक्ति में महेश और भवानी को गुरु माता तथा पिता के रूप में स्मरण करके तथा उनके शक्ति का बखान करके "गुरु की

शक्ति"शब्द का भी परिष्फुटन साबरी भाषा में कर चुके हैं 👈👈 अर्थात मेरी भक्ति गुरु की शक्ति यह दोनों शब्द को तुलसीदास जी अपने साबरी भाषा में यहां पर प्रकट किए हैं..... बाकी रह गया "**फुरोमंत्र ईश्वर वाचा..."**तो ऊपर का पंक्ति को थोड़ा अध्ययन वहां पर

साफ साफ आपको साबर मंत्र तत्व का 👉फुरो यह शब्द आपको दिखाई देगा.........

"तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ "और रही बात ईश्वर वाचा की तो आप पूरी रामचरितमानस का अध्ययन कर दें वहां पर जो कुछ वचन प्रारंभ हुआ है ईश्वर यानी कि भगवान शिव से ही प्रारंभ हुआ है इसी कारण ईश्वर बाचा यह शब्द तत्वअपने आप ही इस ग्रंथ में आ जाता है। और तुलसीदास जी ने यहां पर भगवान शिव और माता पार्वती को इस रामचरितमानस को सिद्ध करने हेतु अपना भक्ति की साक्षता दीए हैं।

सिर्फ इसी भांति गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने हनुमान चालीसा में भी गुरु के रूप में हनुमान जी को लिए हैं और साक्ष के रूप में गौरीस यानी कि शिवजी को लिए हैं। पर जब एक बार उनके ऊपर काशी का एक तांत्रिक एक मरणांतक प्रयोग कर दिया था...... तब उन्होंने बजरंग बाण लिखकर वहां पर सीधे दुहाई शब्द का प्रयोग किए थे। तंत्र बाधा के कारण उन्हें जो अर्श भगंदर रोग हुआ था वह तो तुरंत ही ठीक हो गया..... पर आगे चलकर इस अर्श तथा भगंदर रोग में तुलसीदास जी का मृत्यु हुआ था यह बात लोग हमेशा छिपाते हैं पर यह परम सत्य है।